

बन्दे सांची बोलो रे ^{ssss} पहले सम्मो शब्द ब्रह्म है फिर मुँह खोलो रे
हो बन्दे सांची बोलो रे, हाँ बन्दे सांची बोलो रे
हाँ हाँ फिर मुँह खोलो रे

① सुनते कम और कहते ज्यादा, ये दुनियाँ में दाया ॥२॥

भूठी वाली जोर से बोलो ^{ssss} इसमें नाम के माया --- हाँ हाँ इसमें नाम ---
बन्दे सांची --- पहले सम्मो --- हो बन्दे ---

② बात यहाँ की वहाँ सुनाते, इसमें हैं तैयार ॥२॥

भूठी शान में दिन भर धूमें ^{ssss} बनते हैं दुश्मार --- हाँ हाँ बनते हैं ---
बन्दे सांची --- पहले सम्मो --- हो बन्दे ---

③ एक बात खों कई बातों में बदल बदल कर बोलो ॥२॥

अब सांची की बोरी आई ^{ssss} ॥२॥ जो बिजना सो डोलो --- हाँ हाँ जो बिजना ---
बन्दे सांची --- पहले सम्मो --- हो बन्दे ---

④ सांची बात खों तुरतई कोरे जा है इनकी आदत ॥२॥

धुमा फिर खें बात बनावे ^{ssss} ॥२॥ जैसे लगी अदालत --- हाँ हाँ जैसे लगी ---
बन्दे सांची --- पहले सम्मो --- हो बन्दे ---

⑤ नाना माँत की बातें करते, करते जीवन बीता ॥२॥

सोच में इनकी भूठी है सब ^{ssss} ॥२॥ को रमायण-गीता --- हाँ हाँ को रमायण ---
बन्दे सांची --- पहले सम्मो --- हो बन्दे ---

⑥ "श्री बाबा श्री" सांची को ले हमने सम्मो डोंट ॥२॥

कितनों के घर समर गये हैं ^{ssss} अब बन गये हैं ठार --- हाँ हाँ अब बन गये ---
बन्दे सांची --- पहले सम्मो --- हो बन्दे ---